द्वितिय अध्याय

ऋतु से संबंधित रागों का शास्त्रीय अध्ययन

भारत ऋतुओं का देश है। यहां छः ऋतु चक्र के अनुसार आती है और प्रकृति में बदलाव लाती है। यह बदलाव मानव के जीवन में भी दिखाइ पडता है। विभिन्न ऋतुओं में रहन-सहन, खान-पान, पहनावा-ओढावा आदि में जिस तरह परिवर्तन होता है उसी तरह कलाओं में भी बदलाव दिखाइ पडता है। राग मानवीय भावना है इसलिये इसकी स्वरावली का प्रभाव विभिन्न ऋतुओं में भिन्न-भिन्न तरह से मानस पर अंकित होता है। यों तो हमारे शास्त्रकारों ने सभी ऋतुओं के लिये अलग-अलग रागों का विधान किया है लेकिन प्रचार में केवल वर्षा ऋतु एवं बसंत ऋतु के राग ही प्रचलन में है। अतः यहां हम इन दोनों ऋतुओं में प्रचलित-अप्रचलित रागों का शास्त्रीय विवेचन संक्षिप्त रूप से कर रहे हे।

2.1 वर्षाऋतु के रागों का संक्षिप्त शास्त्रीय अध्ययन

2.1.1 राग-मियांमल्हार [1]

मियां मल्हार यह राग काफी थाट से उत्पन्न माना जाता है। इसमें दोनों निषाद का प्रयोग होता है, कोमल निषाद का प्रयोग आरोह में होता है कभी-कभी दोनों निषाद एक के आगे एक लगाए जाते है। इसके अवरोह में धैवत वर्जित होने से इसकी जाति सम्पूर्ण-षाडव है। इसमें किसी मत से वादी षडज, सम्वादी पंचम, किसी मत से वादी मध्यम सम्वादी षडज है। इसके आरोह में 'ग म प' इस प्रकार से सरल प्रायः नहीं लेना चाहिए वैसे ही अवरोह में 'म ग रे सा' ऐसा कभी नहीं लेना चाहीए, अवरोह में गंधार वक्र रूप से लेना चाहिए। इसके पूर्वांग में 'रे प' की व उतरांग में 'नि ध' की स्वर संगती राग वाचक है। इसके अतिरिक्त 'प नि, नि प' यह भी स्वर संगती आती है। इसका विस्तार मन्द्र, मध्य सप्तक में विलम्बित लय में अति सुंदर होता है। इस राग की उत्पत्ति मियां तानसेन द्वारा हुइ है। यह राग अकबर बादशाह का बहुत प्रिय था एसी कहावत है। इस राग में षडज, गान्धार, मध्यम, पंचम यह स्वर न्यास के है। 'सां, ध, प, म, प, ध सां, ध प' यह स्वर समुदाय इसमें नहीं लेना चाहिए। यदि लिया तो गौड मल्हार सामने आयेगा। मल्हारों के सारे प्रकारों में गौड मल्हार और मियां मल्हार यही दो मल्हार प्रचलित है। ग्वालियर में प्रायः यही दो मल्हार विशेष रूप से गाये जाते है। गंधार का स्थान दरबारी कानडा के गंधार से ऊंचा रहता है। इसमें कोमल निषाद को पंचम तथा धैवत का कण और कोमल निषाद को धैवत का कण बार-बार दिया जाता है इसमें कण अच्छी तरह से न सजे तो राग का रूप स्पष्ट नहीं हो पाता।

आरोह सा, म रे, प नि ध, नि सां।

अवरोह सां प नि प, म प म ग (म) रे सा।

मुख्य स्वर समुदाय रे सा प नि प, म, प प नि ध, नि, सा प ग, म रे सा।

2.1.2 राग गौड मल्हार [2]

गौड मल्हार राग के उत्पत्ति के विषय में संगीत के विद्वानों में मतभेद है। कोइ इसे बिलावल थाट, कोइ खमाज थाट तो कोइ काफी थाट में मानते है, खयाल गायक अधिकतर खमाज थाट में मानते है। बिलावल थाट में मानने का प्रचार बहुत ही कम है। हम खमाज थाट ही मानकर इस राग का यहां विचार करेंगे। इसमें गौड व शुद्र का मल्लाह का मिश्रण है। 'रे ग रे म ग रे सा, रे ग रे ग म प म ग' यह गौड का अंग व 'रे रे प, म प, ध सां, ध प म' यह मल्हार का अंग इसमें है। इसके आरोह में निषाद अल्प है और वह भी शुद्ध है, अवरोह में कोमल निषाद का प्रयोग होता है परन्तु सरलता में नहीं होता है, बिलावल अंग से 'सां ध नि प' इस प्रकार होता है। जाति सम्पूर्ण है। इसकी वादी मध्यम व सम्वादी षडज है। इसका गान समय वर्षा ऋतु है। इसमें 'म ग म रे प प नि ध नि सां, सां रें सां सां ध नि प, ध ग प म' यह स्वर समुदाय बिलावल के आते है परन्तु मध्यम पर न्यास करने से गौड मल्हार दिखने लगता है। इसमें मध्यम षडज, यह स्वर न्यास के है। कभी-कभी दोनों गंधार लेने वाले ध्रुपद भी दिखाई देते है। इसका विस्तार अधिकतर मध्य व तार सप्तक में ही होता है।

आरोह सा, रे ग रे म ग रे सा, रे प, म प, प सां।

अवरोह सां ध नि प, म प म ग, रे ग रे म ग रे सा।

मुख्य स्वर समुदाय रे म रे म ग, रे सा, म प ध सां ध प म।

2.1.3 राग - सूर मल्हार [3]

यह राग काफी थाट से उत्पन्न माना जाता है। इसके रचयिता भक्त सूरदास थे इस कारण इस राग का नाम सूर मल्हार रखा गया है ऐसा कहा जाता है। इस राग में दोनों निषाद का प्रयोग किया जाता है, आरोह में तीव्र और अवरोह में कोमल लिया जाता है। इस राग के सम्बन्ध में भी कुछ मतभेद है, कोइ इसमें गन्धार, धैवत पूर्ण तथा वर्ज्य करके औडव-औडव जाति मानते है, कोइ आरोह में गन्धार धैवत व अवरोह में केवल गन्धार वर्ज्य करके औडव-षाडव जाति मानते है। वादी-सम्वादी के विषय में कुछ लोग वादी मध्यम, सम्वादी मध्यम, कुछ लोग वादी पंचम सम्वादी षडज, कुछ वादी मध्यम सम्वादी मध्यम मानते है परन्तु वादी मध्यम, सम्वादी षडज मानना ही उचित है। इसका भी गायन समय वर्षा ऋतु ही है। कोइ गायक इसमें गन्धार कोमल लेने

को कहता है वे उसे 'रे ग सा रे ग म रे सा' इन टुकडों में लेते है। यह प्रकार रामपुर के गायकों में ध्रुपद, धमार में प्रायः सुनने को मिलता है परन्तु ख्याल गायक यह प्रकार नहीं लेते है। इस राग में 'सा, म, प' इन स्वरों का प्राबल्य है और यही न्यास स्वर है। इसमें 'रे प, रे म, नि प, म रे' ये स्वर संगतियाँ प्रमुख रूप से आती है। इसमें ब्रिंदावनी सारंग, मध्यमादि सारंग, सामन्त सारंग, बडहंस सारंग इन सारंगों के प्रकारों का बहुत अंग आता है। 'नि ़सा रे, म रे, म प नि ध प' इस स्वर समुदाय द्वारा व म रे की मींड होने से सोरठ का आभास होता है, परन्तु इसके आगे 'नि प, रे म' यह स्वर समुदाय जोडने से वह आभास दूर हो जाता है। ''म रे, रे प'' यह स्वर संगतियाँ मल्हार की सूचक है, सूर मल्हार का मुख्य स्वर समुदाय ''नि म प, नि ध प रे म यह है, यह स्वर समुदाय द्वारा यह राग पहचान में आता है। ''नि सा रे, म रे, प म रे'' यह स्वर समुदाय सारंग राग का है। यह सूर मल्हार में भी आता है, किन्तु यह स्वर समुदाय सूर मल्हार में इस प्रकार होना चाहिए जैसे - 'नि ़सा रे, म रे, प म रे' जिसमें सूर मल्हार बिल्कुल स्पष्ट हो जाएगा। सूर मल्हार की तीव्रता मंद्र सप्तक में अधिक नहीं होती है, मध्य व तार सप्तक में ही होती है।

आरोह	सा [म] रे म, म प, नि ध प रे म, म प नि सां।
अवरोह	सां नि ध प म, नि ध प, नि प, म रे म [सा] रे सा।
मुख्य स्वर समुदाय	सां, नि म, नि ध प, रे म, नि प म रे म सा रे सा।

2.1.4 राग रामदासी मल्हार [4]

यह राग काफी थाट से उत्पन्न होता है इसके रचयिता बाबा रामदास नायक जो अकबर के दरबारी थे उनको माना जाता है। इसमें दोनों गन्धार और दोनों निषाद लगते है, दोनो गन्धार लगने के कारण यह सभी मल्हार के प्रकारों से भिन्न हो जाता है। कोमल गन्धार व कोमल निषाद का प्रयोग अधिकतर आरोह में किया जाता है। अवरोह में कोमल गन्धार वक्र रूप से 'ग म रे सा' इस प्रकार लगता है, वादी मध्यम, सम्वादी षडज है, गान समय वर्षाऋतु है। इसमें शहाना, गौड, मल्हार व कानडा राग का संयोग है। म रे रे प, नि प यह शहाना का स्वर समुदाय, म रे, रे प, ग म रे सा यह मल्हार का स्वर समुदाय, ग म रे सा और नि प की संगति कानडा का स्वर समुदाय इस राग में है। इस राग के न्यास स्वर सा, म, प यह है। कोइ कोइ गुणीजन इसमें केवल कोमल गन्धार का ही प्रयोग करते है, किन्तु प्रचार में दोनों गन्धार का प्रयोग किया जाता है। ग म रे सा यह स्वर समुदाय मल्हार का अंग बनाने के लिये [म] ग म रे सा इस प्रकार से गाना चाहिए, म रे की मींड मल्हार का अंग सूचक करती है। यह राग अप्रसिद्ध रागों में से माना जाता है।

आरोह नि सा रे ग म, प ग, म, रे प प ध नि सां।

अवरोह सां, नि, ध नि प ग म रे सा।

मुख्य स्वर समुदाय नि सा रे ग म, ग म, प, म, नि प, ग म, प ग, म रे प, ग, म रे सा।

2.1.5 राग मेघ मल्हार [5]

राग मेघ मल्हार भी काफी थाट से उत्पन्न माना जाता है। यह राग अपने यहां मुख्य छः रागों में से एक माना जाता है। इसमें गांधार व धैवत स्वर वर्ज्य है। इसकी जाति औडव-औडव है। कुछ गायक इसमें कोमल गांधार लेते है और कुछ गायक धैवत का भी प्रयोग करते है। इसमें षडज वादी व पंचम सम्वादी है। किसी मत से मध्यम सम्वादि है, वैसे षडज वादी व मध्यम सम्वादी मानना ज्यादा उचित प्रतित होता है। इसमें दोनें निषाद लगते है, आरोह में तीव्र व अवरोह में कोमल का बहुधा प्रचार है। 'म रे प' यह मल्हार अंग का स्वर विन्यास इसमें प्रमुख रूप से आता है। 'म रे, रे प ध नि प' यह स्वरों की संगति है। इसका विस्तार तीनों सप्तकों में होता है। 'सा म' तथा 'प' यह स्वर प्रबल है। इसकी प्रकृति गंभीर है। गान समय वर्षा ऋतु है। इसे अति निकट आने वाला राग सारंग है परन्तु मेघ मल्हार में ऋषभ, मध्यम का कण लगाकर तीन चार बार एक सा आंदोलन देकर गाना पडता है। जैसे 'म रे, म रे, म रे, म रे सा, ध नि प' और यही स्वर समुदाय मेघ मल्हार पहचानने में सहायक होता है ऐसा सारंग में नहीं लिया जाता है। इसके अतिरिक्त मेघ मल्हार में मध्यम पर अनेक बार न्यास किया जाता है दोनें रागों के वादी-सम्वादी भी भिन्न है, इस कारण एक दूसरे से भिन्न हो जाते है। तथापि सारंग को बचाकर मेघ मल्हार गाना अत्यंत कठिन है। यह राग अधिकतर आलापों द्वारा ही स्पष्ट हो सकता है, तानों में तो जगह-जगह सारंग का ही आभास होगा। इसमें विलम्बित ख्याल बहुत कम सुनने में आते है। इसके पास आने वाला सूरदासी मल्हार भी है परन्तु उसमें धैवत का प्रयोग होने से वह इससे भिन्न हो जाता है। इसमें गांधार व धैवत वर्ज्य होने से शुद्ध मल्हार, गौड मल्हार, मियां मल्हार इस से अपने आप ही भिन्न हो जाते है। अवरोह में 'सां नि प म रे सा' यही स्वर समुदाय को भिन्न-भिन्न प्रकार से कहकर मेघ मल्हार व सारंग भिन्न-भिन्न रखना अत्यंत कठिन है। इसकी तानों में भिन्न-भिन्न स्वरों के कण लगाने में कठिनाइ होने से यह राग आलापों द्वारा ही स्पष्ट होता है।

आरोह	सा ^{म}रे, ^{म}रे, ^{म}रे, ^{म}रे म रे सा, ^{प}नि प, नि सा, ^{म}रे म प नि सां।
अवरोह	सां ^{प}नि प, म रे सा।
मुख्य स्वर समुदाय	सा ^{म}रे ^{म}रे ^{म}रे ^{म}रे म रे सा, नि, प म रे प, रे म, रे, सा।

2.1.6 राग नट मल्हार [6]

नट मल्हार का आकर्षक स्वरूप नट तथा मल्हार इन दो प्राचीन रागों के मिश्रण का परिणाम है। यह राग अत्यंत श्रुति मधुर है। प्रचार में इसको दो तीन प्रकार से गाया जाता है। प्रथम प्रकार में दोनों गंधार एवं दोनो निषाद व अन्य स्वर शुद्ध लगते है। इसको काफी थाट जन्य मानते है। दूसरे प्रकार में निषाद का दोनों रूप व अन्य स्वर शुद्ध लगते है। गंधार इसमें केवल शुद्ध ही प्रयोग करते है। केवल शुद्ध गांधार प्रयोग होने वाला नट मल्हार भी दो प्रकार से गाया बजाया जाता है। एक प्रकार में नट और मल्हार के स्वरूप को मिलाकर गाते है और दोनों निषाद का संयुक्त प्रयोग मियां मल्हार की भांती बीच-बीच में करते रहते है। दूसरे प्रकार में केवल नट व शुद्ध मल्हार तथा बिलावल का मिश्रण करके गाते है। यह प्रकार गौड मल्हार के अधिक निकट है। प्रचार में नट मल्हार का यही स्वरूप अधिक सुनने को मिलता है। स्पष्ट है की यह अन्तिम प्रकार अन्य प्रकारों से अधिक मनोहरी होने के कारण लोगों ने इसी को अधिक अपनाया जिस कारण प्रचार में यह अधिक सुनने को मिलता है।

प्रचलित नट मल्हार राग बिलावल थाट का राग है। इसके आरोह व अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने के कारण इसकी जाति सम्पूर्ण मानी जाती है। इस राग का वादी स्वर मध्यम एवं संवादी स्वर षडज है। वर्षा ऋतु में यह राग सर्वकालिक है किन्तु अन्य समय में इसके गायन, वादन का समय रात्रि का द्वितिय प्रहर है। यह पूर्वांग प्रधान राग है। षडज, ऋषभ व पंचम इस राग में न्यास के स्वर है।

नट मल्हार में गंधार नट राग एवं निषाद बिलावल राग की पुष्टि करता है। इस हेतु गंधार और निषाद को उचित परिणाम में प्रयोग करते रहना चाहिए। नट मल्हार में ऋषभ और मध्यम स्वर अपने-अपने भिन्न-भिन्न लगावों के द्वारा नट और मल्हार इन दोनों रागों की पुष्टि करते है उदाहरणार्थ - ऋषभ जब ^{ग}रे ^{ग}रे ग इस प्रकार गंधार से प्रभावित होता है तब वह नट राग का द्योतक है किन्तु जब '^{म}रे ^{म}रे प' इस भांति मध्यम का स्पर्श करके ऋषभ पंचम की ओर जाता है तब मल्हार का स्वरूप सामने आता है। इसी प्रकार आरोह में मध्यम का प्रयोग '^{ग}रे ^{ग}रे ग ^{म}ग म' नट राग का प्रतिपादन करता है। तथा अवरोह में 'सां ध प म' इस प्रकार का प्रयोग मल्हार राग का अनुमोदन करता है। मध्यम व ऋषभ जब एक के बाद एक लगाये जाते है जैसे 'म रे' तब भी ये दोनों स्वर भिन्न-भिन्न अंग से दोनों रागों की सहायता करते रहते है। जब बिलावल अंग

से 'म ग म रे' या 'ग म रे' इस प्रकार गंधार के साथ म रे स्वर मीड रहित होकर सामने आते है तो नट राग को घोषित करते है। किन्तु जब इन दोनों स्वरों का मींड युक्त प्रयोग होता है जैसे 'म रे' तब ये अपने को नट का विपक्षी तथा मल्हार का प्रतिपक्षी होने का दावा करते है। यह दोनों स्वर अपने अपने प्रबल प्रभाव से नट मल्हार को अन्य समप्रकृति रागों से भिन्न करते है तथा दोनों रागों को सुन्दर मिश्रण होने के उत्तम परिणाम को साथ करने में पूर्ण सहयोग देते है। इसके आरोह में 'सा रे ग म' व 'सा रे ग रे ग म' इस प्रकार मध्यम पर ठहराव होता है।

आरोह	सा रे ग म प ध नि सां
अवरोह	सां ध नि प म ग म रे ग म रे सा
मुख्य स्वर समूह सा	ग रे ग रे ग ग म म रे म रे व ध ध प म प म ग म रे सा।

2.1.7 राग मीराबाइ की मल्हार [7]

प्रस्तुत राग काफी थाट जन्य है। इसमें दोनो धैवत, दोनों गंधार तथा दोनों निषाद का प्रयोग होता है। यह अप्रचलित राग है जो संकीर्ण जाति का है। इस राग का वादी स्वर मध्यम और संवादी स्वर गंधार है। वक्र रूप से सातों स्वरों का प्रयोग होने से इस राग की जाती सम्पूर्ण सम्पूर्ण है। षडज, मध्यमऔर पंचम न्यास स्वर है। इस राग का आरोह-अवरोह निर्धारित करना कठिन प्रतीत होता है अतः इस राग का स्वरूप दिया जा रहा है जिसके आधार पर इस राग की प्रस्तुति होती है।

म रे, सा रे, नि ऩसा, म ग, म ग, म रे प, म प
नि ध नि सां, रें सां रें सां नि ध नि ध प,
म प सां ध नि प, म प म ग म म,
नि प म रे म प ग म रे सा, म प
नि सां नि सां रें सां ध, ध नि प,
सा रे ग म रे प ध ध नि सां,
सां ध नि प म ग ग म म, नि
प रे म प ग म रे सा।

इसी राग का दूसरा प्रकार खमाज थाट जन्य है। इस राग में दोनों निषाद तथा अन्य स्वर शुद्ध है। पंचम वादी षडज संवादी व जाति सम्पूर्ण है। मल्हार का प्रकार होने के कारण वर्षाऋतु में किसी समय भी गाया जा सकता है। परन्तु अन्य समय में गाने के लिये रात्रि का द्वितीय प्रहर निश्चित है। राग के स्वरूप को देखने से स्पष्ट है कि इस राग में मियां मल्हार और खमाज का मिश्रण किया गया है क्योंकि मियाँ मल्हार के कोमल गंधार को छोडकर तथा खमाज के लगभग सभी स्वर व स्वर संगतियों का प्रयोग किया गया है।

आरोह सा ग म रे प, म प नि ध नि सां

अवरोह सां नि ध प, म ग रे रे प, म ग रे सा

मुख्य स्वर समूह ग म प ध म ग म रे म रे प।

2.1.8 राग धूलिया मल्हार [8]

मल्हार का यह प्रकार प्रचलन में बहुत कम है। संस्कृत ग्रंथों में यह प्रकार नहीं दिया गया है। इसमें दोनों गंधार व निषाद का प्रयोग होता है। आरोह में गंधार व निषाद वर्जित होने के कारण इसकी जाति औडव संपूर्ण है। वादी मध्यम तथा संवादी षडज है। वर्षा ऋतु में किसी समय भी गाया जा सकता है अन्य समय में गायन का समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है।

मुख्य रुप से इस राग का समप्रकृति राग सूरदासी मल्हार और देस मल्हार व सोरठ मल्हार है परन्तु सूरदासी मल्हार में धेवत का अल्पत्व तथा गंधार वर्जित और देस मल्हार में शुद्ध गंधार का स्पष्ट प्रयोग तथा सोरठ में धैवत का दीर्घ प्रयोग व गंधार वर्जित या अल्प परिमाण में होने के कारण इन सभी रागों में धूलिया मल्हार भिन्न दिखता है।

आरोह सा रे म, प नि सां।

अवरोह सां नि ध प म रे म रे ग रे सा।

मुख्य स्वर समूह नि ध प म रे म रे प म रे ग रे सा।

2.1.9 राग चरज की मल्हार [9]

मल्हार का यह अप्रचलित प्रकार है। इसमें दोनों निषाद तथा गन्धार कोमल एवं अन्य स्वर शुद्ध प्रयुक्त हो ते है। आरोह में गंधार, धैवत वर्जित और अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होता है इसके कारण इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। इस राग का वादी स्वर षडज और सम्वादी स्वर पंचम है। इस राग में देश सेंदुरा और मल्हार राग का मिश्रण दिखाइ पडता है। वर्षा ऋतु में किसी भी समय इस राग को गाया बजाया जा सकता है। शास्त्रीय दृष्टिकोण से इसे मध्यरात्री में गाने बजाने का निर्देशन किया गया है। यह मल्हार अंग का राग है जिसे काफी थाट जन्य माना जा सकता है। इस राग का स्वरूप इस प्रकार है

सा म रे ^{म} रे प म प ^{म} ग रे ग सा,
रे ग सा रे म प नि ध प म रे म,
म प ग रे ग सा।
सा म रे प, म प नि ध प, म प नि सां,
रें गं रें सां सां प ध म प नि ध प म
रे रे प म प ग रे ग सा।

2.1.10 राग जयन्त मल्हार [10]

यह राग जयजयवन्ती और मल्हार राग के मिश्रण से बना है। इसकी उत्पत्ति काफी थाट से होती है। इसमें दोनों निषाद, दोनों गन्धार तथा अन्य शुद्ध स्वर लगते है। इसकी जाती सम्पूर्ण सम्पूर्ण है। इसका वादी ऋषभ और सम्वादी पंचम है। इस राग का गायन काल रात्रि का दूसरा प्रहर है। इसके पूर्वांग में जयजयवन्ती तथा उत्तरांग में मल्हार की प्रधानता है।

थाट	काफी
जाति	सम्पूर्ण–सम्पूर्ण
वादी–संवादी	ऋषभ–पंचम
गायन समय	रात्रि का दूसरा प्रहर
आरोह	सा म रे प, म प नि ध नि सां।
अवरोह	सां ध नि म प म ग रे, ग रे सा।

मुख्य स्वर समूहरे प, म ग रे ग रे सा नि सां ध नि रे सा

2.1.11 राग सामन्त मल्हार [11]

मल्हार का यह स्वरूप भी प्रचलन में कम है। कोमल निषादयुक्त मेघ मल्हार के स्वरूप में ही शुद्ध धैवत का प्रयोग कर राग की रचना की गइ है अथवा सामन्त सारंग में सारंग अंग के स्थान पर 'म रे म रे प रे म' मल्हार अंग का यह स्वर समूह जोडकर इस राग का स्वरूप बनाया गया है।

यद्यपि यह स्वरूप मेघ मल्हार व सूर मल्हार तथा मेघ मल्हार के धैवत युक्त प्रकार के अत्यंत निकट है परन्तु कुछ खास नियमों के कारण इन सभी प्रकार से यह भिन्न दिखता है तथा सूर मल्हार में दोनों निषाद औडव, मेघ मल्हार में धैवत वर्जित, धैवत युक्त मेघ मल्हार में दोनों निषाद के साथ 'नि ध नि सां' इस प्रकार धेवत का आरोह में प्रयोग होने के कारण इन सभी मल्हारों के प्रकार से सामंत मल्हार का स्वरूप भिन्न दिखता है।

आरोह सा रे म, प नि सां।

अवरोह सां नि ध प म रे नि सा

मुख्य स्वर समूह नि ध प म रे म रे प म, रे नि नि नि सा।

2.1.12 राग चंचलस मल्हार [12]

प्रस्तुत राग का थाट काफी, गंधार कोमल, निषाद दोनों तथा अन्य स्वर शुद्ध है। धैवत वर्जित अतः जाति षाडव-औडव है। मध्यम वादी तथा षडज संवादी है। गायन समय वर्षा ऋतु है और स्वरूप निम्नवत है।

सा प रे रे प म रे सा रे सा, सा नि ऱे सा,

नि प प़ म़ प़ सा, नि सा रे म ग म ग म सा रे सा,

म प सा सा नि म प सां नि सां नि सां म प नि सां,

म प नि सां रें नि सां प नि म प रे म सा रे सा।

उपर्युक्त स्वरूप से एसा लगता है कि शुद्ध मल्हार में सारंग तथा कान्हडा अंग के स्वर समूह का मिश्रण करके इस राग की रचना की गइ है। क्योंकी दोनों निषाद व ऋषभ का प्रयोग सारंग तथा 'म ग मग म सा रे सा' स्वर समूह से कान्हडा अंग स्पष्ट दिखता है। यद्यपि चंचलस मल्हार के इस स्वरूप में कोमल निषाद आन्दोलित है और इस राग में ऋषभ सारंग अंग से प्रयोग हुआ है इस भिन्नता के आधार पर यह राग मेघ मल्हार तथा मल्हार के अन्य प्रकार से भी भिन्न दिखता है। इसमें षडज, मध्यम और पंचम न्यास के स्वर है तथा निषाद गंधार व ऋषभ अल्पत्व के स्वर है। आलाप तथा तान का विस्तार स्थायी व अन्तरा के स्थान पर करना चाहिए क्योंकि एसे रागों के लिये यही नियम है।

राग चंचलस मल्हार (दूसरा प्रकार)

चंचलस मल्हार के दूसरे प्रकार के इस स्वरूप में केवल कोमल निशाद के कारण मेघ मल्हार और आरोह में 'सां नि ध प' स्वर समूह प्रयोग देस तथा 'नि ध नि प ध म प सा' स्वर समूह से राग शहाना का अंग दिखता है। अर्थात मुख्य राग मल्हार में मेघ व देस तथा शहाना राग का मिश्रण करके राग की रचना की गइ है।

थाट काफी वादी मध्यम संवादी षडज, गंधार वर्जित तथा निषाद कोमल और आरोह में धैवत वर्जित होने के कारण इसकी जाति औडव-षाडव है। राग का स्वरूप वक्र होने के कारण अनेक स्वर का विस्तार स्थाइ व अन्तरे के चलन को ध्यान में रखकर करना चाहीए।

मूल स्वरूप-

सा रे म, म रे रे प,

नि ध नि ध नि प ध प सां,

नि ध प म रे म रे रे नि सा,

रे म प रे म, म रे प म,

नि ध नि प ध म प सां,

नि ध प म रे रे म,

रे रे प म म रे नि सां।

2.1.13 राग अरूण मल्हार [13]

राग अरूण मल्हार बिलावल थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें दोनों निषाद अन्य स्वर शुद्ध है। वादी मध्यम तथा संवादी षडज है। वर्षा ऋतु में किसी समय भी गाया जा सकता है। अन्य समय में गायन का समय रात्रि का द्वितिय प्रहर है। पं. भातखंडे जी ने अपने संगीत शास्त्र के प्रथम भाग में शुद्ध मल्हार के वर्णन में एक स्थान पर मल्हारों के प्रकार के बारह नाम लिखे है जिसमें एक अरूण मल्हार का भी नाम है।[13]

इस राग का स्वरूप निम्नवत है -

सा रे ग म, म रे रे म प,

नि प नि ग म ग म रे सा,

रे ग म ग म म रे रे प,

ध ध नि प ध ग प ध ग प ग,

म रे सा, रे ग म ग म,

म रे रे प प नि ध़ नि ़सा सां ध नि प,

सां ध प म, म रे रे प ध ध नि प ध ग म,

ग म रे रे प, नि प ग म ग म रे सा

रे ग म ग म।

2.1.14 राग रूपमंजरी मल्हार [14]

प्रस्तुत राग मल्हार का एक अप्रसिद्ध प्रकार है। इसकी बंदिश के आधार पर इसका स्वरूप निम्म प्रकार से होता है। -

सा म रे रे प म ग रे सा,

सा नि ध प़ ़सा रे ग सा रे म,

प नि ध नि प म ग रे सा,

नि ध नि प ़सा।

उपर्युक्त स्वर विस्तार में 'सा म रे रे प' शुद्ध मल्हार और 'रे ग सा रे म प म ग रे' कोमल गंधार युक्त देस तथा 'सां नि, ध नि ध प म म प म ग सा रे म म' झिंझोटी का अंश दिखता है। 'नि ध नि प' स्वर संगति देस और झिंझोटी इन दोनें रागों के स्वर समूह के साथ अधिकतर मन्द्र में प्रयोग हुआ दै इस हेतु शहाना राग का अंश न कहकर प्रस्तुत राग की विशेष स्वर संगति कहना उचित है।

थाट खमाज, निषाद कोमल, गंधार दोनों, अन्य स्वर शुद्ध है। मध्यम वादी तथा षडज संवादी है। गायन समय वर्षा ऋतु है। आरोह में गंधार व धैवत वर्जित तथा अवरोह में सभी स्वरों का प्रयोग होने के कारण इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। षडज व मध्यम तथा पंचम न्यास बहुत्व के स्वर है। देस अंग से ऋषभ प्रयोग होने पर उपन्यास युक्त परन्तु झिंझोटी अंग से लंघन व अनाभ्यास युक्त है। धैवत व निषाद दोनों स्वर न्यासहीन होकर इस राग में प्रयोग होता है।

एसे रागों का आलाप-तान का विस्तार स्थाई व अन्तरे के आधार पर करना चाहिए एसा विद्वानों का मत है।

2.1.15 राग छाया मल्हार [15]

छाया और मल्हार राग के मिश्रण से इसकी उत्पत्ति हुइ है। यह बिलावल थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें सभी शुद्ध स्वरों का प्रयोग होता है तथा इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसमें छाया राग का मिश्रण है और छाया राग बिलावल अंग का है इस कारण इस राग में भी अवरोह में 'सां ध नि प' इस प्रकार कभी-कभी कोमल निषाद प्रयोग होता है। इसमें पंचम वादी और षडज संवादी है। मल्हार का प्रकार होने का कारण इसके गाने का सम्पूर्ण समय वर्षा ऋतु है।

इसमें म रे म रे प मल्हार का स्वर समूह है और 'सा रे ग म प रे रे ग म प सां ध नि पर म ग म रे सा' इत्यादी स्वर समूह छाया रंग के ही है।

निष्कर्षतः कह सकते है कि मल्हार के बहुत से प्रचलित-अप्रचलित प्रकार है। प्रचलित प्रकारों के स्पष्ट रूप से स्वरूप प्राप्त होते है लेकिन अप्रचलित प्रकारों के स्वरूप स्पष्ट रूप से प्राप्त नहीं हो पाते। हर कलाकार या हर घराने के उस्ताद या गुरु अपने अनुसार उन अप्रचलित रागों के स्वरूप को व्यक्त करते है जिसके कारण इसके कइ रूप सामने आते है। इन रागों के स्वरूप स्पष्ट नहीं होने के कारण प्रचार में नहीं आ पाए। यह भी देखा जा रहा है कि आज विद्वानजन नये नये मल्हार के प्रकारों को सामने ला रहे है। किसी भी प्रचलित राग में मल्हार अंग को जोडकर प्रस्तुत करते है। जैसे देश मल्हार, बागेश्री मल्हार, काफी मल्हार इत्यादि।

2.2 बसंत ऋतु के रागों का शास्त्रीय अध्ययन

बसंत ऋतु का वातावरण संगीतज्ञों के हृदय को छु लिया है। जिसके कारण इस ऋतु के रागों की संख्या अनगिनत है। इस ऋतु को ऋतुओं का राजा भी कहा जाता है। इस ऋतु में प्रकृति अपनी पुरानी वस्तुओं को त्याग कर नए परिधान को ग्रहण कर नये-नये रूपों में सामने आती है। चहुंओर एक मदमस्त कर देने वाली सुगंध फैली होती है। इन मादकता से तरबतर भरे हुए सांगीतिक स्वरों की अवतारणा हृदय को छु जाती है। इन्हीं में से कुछ प्रचलित एवं अप्रचलित रागों को शास्त्रीय परिचय यहां पर प्रस्तुत किया जा रहा है।

2.2.1 राग बहार [16]

राग बहार लोकप्रिय काफी थाट के अन्तर्गत आता है। इसमें गंधार कोमल और दोनों निषाद प्रयोग किये जाते है। आरोह में शुद्ध और अवरोह में कोमल निषाद लिया जाता है। ऋषभ आरोह में और धैवत अवरोह में वर्ज्य होने से इसकी जाति षाडव-षाडव मानी जाती है। बहार राग के गीतों में अधिकतर बसन्त ऋतु का वर्णन मिलता है, इस लिये बसन्त ऋतु में राग बहार को किसी भी समय गाया करते है।

इसका गायन समय रात्रि का द्वितीय प्रहर है। यह उत्तरांग प्रधान राग है, अतः इसका चलन अधिकतर मध्य सप्तक के उत्तरार्ध और तार सप्तक में होता है। इसका समप्रकृति राग मियाँ मल्हार है। राग बहार के स्वरों का चलन मियाँ मल्हार की तुलना म् ध्रुत तथा उत्तरांग प्रधान होने के कारण दोनों राग सरलता से अलग किये जा सकते है। इस राग का चलन वक्र है। 'सा-म' और 'म-ध' की संगति से राग की सुन्दरता में वृद्धि होती है।

आरोह	सा म, म प <u>ग</u> म, ध ड नि सां।
अवरोह	सां <u>नि</u> प, म प, <u>ग</u> म रे सा।
पकड	सा म, म प, <u>ग</u> म, ध ड नि सां।

2.2.2 राग बसंत [17]

राग बसंत एक प्रसिद्ध प्राचीन राग है। इसका उल्लेख प्रत्येक प्राचीन ग्रंथ में मिलता है। यह अवश्य है कि वर्तमान बसंत राग का स्वरूप प्राचीन स्वरूप से भिन्न हो गया है। विभिन्न ग्रंथकारों ने विविध प्रकार के बसंत का वर्णन भी किया है। यहाँ पर प्रचलित स्वरूप की व्याख्या की जा रही है।

इस राग को पूर्वी थाट जन्य माना गया है। इसमें ऋषभ-धैवत कोमल व दोनों मध्यम का प्रयोग किया जाता है, इसलिये इसकी जाति औडव-सम्पूर्ण है। वादी स्वर तार सा और संवादी पंचम है। इस राग का गायन समय रात्रि का अंतिम प्रहर है।

कभी-कभी शुद्ध धैवत युक्त बसंत की भी चर्चा सुनी जा सकती है। इस प्रकार के बसंत को मारवा थाट जन्य माना गया है किन्तु यह प्रकार कभी सुनाई नहीं पडता। कुछ पुराने संगीतज्ञ इसमें केवल तीव्र मध्यम प्रयोग करते हुए सुनाइ पडते है, किन्तु वर्तमान प्रचलित बसंत में शुद्ध मध्यम का अल्प प्रयोग आरोह में इस प्रकार सुनाई पडता है - सा म, म ग, म ग रे सा।

कभी कभी यहाँ पर ललित अंग भी दिखा देते है जैसे - सा म, म म ग, म ग रे सा म ध सा। किन्तु ललितांग दिखाना आवश्यक नहीं है।

राग की जाति के विषय में विद्वानों में मतभेद है। कुछ ने औडव-सम्पूर्ण कुछ ने षाडव-सम्पूर्ण और कुछ ने सम्पूर्ण जाति का राग माना है। इस तरह स्पष्ट है कि जो कुछ मतभेद है, वह आरोह से संबंधित है, अवरोह से नही। 'रे-प' वर्ज्य मानने से औडव और केवल 'प' वर्ज्य मानने से षाडव जाति का आरोह माना गया है। जिन विद्वानों ने आरोह में ऋषभ स्वर को वर्ज्य माना है उन्होंने भी तार सप्तक के आरोहात्मक स्वरों में ऋषभ का अल्प प्रयोग स्वीकार किया है जैसे 'म ध, सां ड ड नि रें सां, नि रें गं रें सां। आरोह में पंचम सर्वथा वर्ज्य है, अतः इसके चलन में 'म ध सां' अथवा 'म ध रे सां' होता है। कभी कभी म प ध प म ग म ड ग स्वरों के उच्चारण में पंचम का आरोहात्मक प्रयोग करते है। इक विशिष्ट स्थान पर पंचम का अल्प प्रयोग मानते हुए इसको औडव-सम्पूर्ण या षाडव-सम्पूर्ण माना गया है।

राग बसंत के समीप का राग परज है। परज भी उत्तरांग प्रधान राग है और दोनों रागों में लगभग समान स्वर प्रयोग किये जाते है। चलन भेद के कारण दोनों राग पृथक किये जाते है। राग बसंत के आरोह में निषाद अल्प है, तो परज के आरोह में यही स्वर बहुत्व रखता है। इसलीये राग बसंत में 'म ध सां' अथवा 'म ध रें सां' का प्रयोग करते है तो परज के आरोह में 'म ध नि सां, नि ध नि' अथवा 'सां रें सां रें नि सां नि ध नि' प्रयोग करते है।

आरोह	सा ग, म॑ ध॒ रें, सां नि सां।
अवरोह	रें॒, नि ध॒ प, म॑ग म॑ड ग रे॒ सा।
पकड	म धरें सां, नि ध॒ प म॑ग म ड ग।

2.2.3 राग बसंत बहार [18]

बहार राग जब अन्य रागों से मिलता है तो उसे नया नाम दे दिया जाता है। इसी से भैरव बहार, बागेश्री बहार, जौनपुरी बहार और अडाना बहार इत्यादि नाम प्रचार में आये है। इसी प्रकार बसंत बहार राग में बहार का मिश्रण होने से बसंत बहार बनता है। बसंत पूर्वी थाट का षाडव संपूर्ण राग और बहार काफी थाट का षाडव जाति का राग है। जबकि बहार में म वादी और सा संवादी है। बसंत में रे ध कोमल व दोनों मध्यम लगते है तथा आरोह में पंचम वर्जित है जबकि बहार में गंधार कोमल और दोनो निषाद लगते है। किसी भी राग में बहार जोडने के लिये उसके स्वर स्वतंत्र रूप में अलग दिखाने पडतै है। बहार के मुख्य चलन में 'सा नि ़सा, ध नि सा, म, म प ग॒, म ध॒, नि सां, नि॒ प, म प, ग॒ म, रे सा' ये स्वर लगते है।

आरोह	सा म, म प, ग॒ म, नि॒ ध नि सां।
अवरोह	रें॒ सां, नि ध॒ प, म॒॑ग, रे॒ सा।
पकड	सां नि ध॒ प, म॒॑ग, म॒ ग, रे॒ सा, सा म, म प, ग॒ म, नि॒ ध॒ प, म॒ ग॑, म॒ ग॑रे॒ सा।

2.2.4 राग भैरव बहार [19]

भैरव बहार यह एक काल्पनिक स्वरूप है। इसे भैरव व बहार इन दो रागों का सुन्दर मिश्रण करके बुद्धिमता व कुशलता पूर्वक गाया जाता है। थाट पद्धति के अनुसार इन दोनों रागों के थाट भिन्न-भिन्न होने से इसका एक थाट निश्चित मत से नहीं हो सकता है। अहीर भैरव, आनन्द भैरव इन रागों में भी अहीर भैरव मं काफी का मिश्रण होने से भैरव व काफी थाट भिन्न-भिन्न है, आनन्द भैरव में बिलावल का मिश्रण होने से भैरव व बिलावल थाट भिन्न-भिन्न है। परन्तु यह भैरव के ही प्रकार होने से इन रागों को भेरव थाट में ही माना गया है। भैरव बहार में दोनों ऋषभ, दोनो गंधार, दोनों निषाद व अन्य स्वर शुद्ध लगते है। किसी मत से इसमें धैवत कोमल लेते है, परन्तु हमारे मत से केवल शुद्ध धैवत ही लेना चाहिए। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है। गायन समय प्रातः काल अथवा बसन्त ऋतु है। इसमें अधिकतर बहार का ही अंग अधिक आता है, भेरव का अंग षडज से

पंचम तक आता है, इसके कारण इसमें मध्यम वादी व षडज संवादी मानना चाहिए। अवरोह में प्रायः गंधार वक्र रूप से लेना चाहिए। आलाप का अंत भैरव अंग में ही करना चाहिए। यह राग मधुर व प्रसिद्ध है।

आरोह सा रे, सा म, प ग म, ध नि सां।

अवरोह सां नि ध प म, नि प म, प म, ग म, रे सा।

पकड सा रे, सा, म, प, ग, म नि, ध प म, प म, ग म रे सा।

बसंत या बहार को अन्य रागों में मिश्रण करके बहुत से राग प्रचार में है जैसे अडाना और बहार के मिश्रण से अडाना बहार, बागेश्वरी और बहार के मिश्रण से बागेश्वरी बहार इत्यादी। बसंत के प्राचीन स्वरूप [20] पर प्रकाश डालते हुए प्रतापनारायण सिंह ने निम्न प्रकार से बताया है।

लेखक के अनुसार यह बसंत मतंग मुनि के अनुसार प्रस्तुत है। यह राग षाडजी, गंधारी, पंचमी और नैषादि जातियों से उत्पन्न है। इसका ग्रह, अंश और न्यास स्वर षडज है। ऋषभ एवं धैवत वर्ज्य है। मध्यम ग्राम की षडजादि मूर्छना है। काकली निषाद का प्रयोग है। वीर, रौद्र, अद्‌भुत और श्रृंगार रसों का पोषक है। आरोही वर्ण में राग का प्रकाशन होता है। स्थायी स्वर अलंकार प्रसन्नादि है। बसंत काल के चौथे प्रहर में यह गाया-बजाया जाता है।

आरोह सा म, ग म प नि सां।

अवरोह नि प ग ग सा।

उस्ताद अलाउद्दीन खां ने शुद्ध बसंत [21] का स्वरूप इस प्रकार बताया है।

आरोह सा ग म ध नि सां।

अवरोह सां नि ध म ग रे सा।

जिसमें उन्होंने स्वयं की रचना 'आलम' उपनाम से की है।

विभिन्न घरानों में विविध रूप से बसंत का स्वरूप दिखाइ पडता है। प्राचीन से लेकर वर्तमान तक इस राग के स्वरूप में अनेक परिवर्तन हुए है।

पंडित दामोदर ने अपने ग्रंथ संगीत दर्पण में भैरव राग को ग्रीष्म ऋतु में गाने के लिये बताया है।

''भैरवः ससदायस्तु ऋतौ ग्रीष्मे प्रगीयते।'' [22]

2.2.5 ग्रीष्म ऋतु के राग भैरव का परिचय

राग भैरव की रचना अपने नाम वाले थाट से मानी गइ है। इस लीये यह अपने थाट का आश्रय राग है। इसमें ऋषभ धेवत कोमल और शेष स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते है। वादी धैवत तथा संवादी ऋषभ है। यही दो स्वर आंदोलित होते है। इसका गायन समय प्रातःकाल का प्रथम प्रहर है, इसलिये इसे प्रातःकालीन संधिप्रकाश राग कहते है। इसकी प्रकृति गंभीर है। कालिंगडा राग से यह बहुत मिलता–जुलता है। इसका गंभीर स्वभाव तथा रे-ध पर आंदोलन भैरव को कलिंगडा से अलग कर देता है। जाति सम्पूर्ण-सम्पूर्ण है।

आरोह	सा रे रे ग म प, ध ध नि सां।
अवरोह	सां नि ध ध प, म ग, रे रे सा।
पकड	ग म ध ध प, म प ग म रे रे सा।

संगीत दर्पण के श्री राग को शिशिर ऋतु में गाने का निर्देशन किया है -

``श्री रागो रागिणीयुक्तः शिशिरे गियते बुधै।'' [23]

प्रचलित राग श्री [24] का स्वरूप इस प्रकार है -

राग श्री को पूर्वी थाट से उत्पन्न माना गया है। इसमें ऋषभ-धैवत कोमल, मध्यम तीव्र व शेष स्वर शुद्ध प्रयोग किये जाते है इसलीये इसकी जाति औडव सम्पूर्ण है। वादी स्वर ऋषभ व सम्वादी स्वर पंचम माना गया है। इसका गायन समय सायंकाल सूर्यास्त के समय है।

यह गंभीर प्रकृति का प्राचीन राग है। इसका उल्लेख सभी प्राचीन ग्रंथों में मिलता है। यह अवश्य है कि राग के प्राचीन और अधुनिक स्वरूप में भिन्नता है। आधुनिक स्वरूप के वादी-सम्वादी में सम्वाद-भाव नहीं है। कारण यह है कि वादी स्वर कोमल ऋषभ है। रे-प में सम्वाद भाव न होते हुए भी इनका मींडयुक्त प्रयोग कानों को भला लगता है। जिस प्रकार मारवा राग के वादी-सम्वादी स्वरों में सम्वाद भाव न होने के कारण उसे राग-नियम का अपवाद मान लिया गया है। उसी प्रकार राग श्री के वादी-सम्वादी स्वरों को भी अपवाद मान लिया गया है, राग मारवा के समान इसे भी सायंकालीन संधिप्रकाश राग माना गया है।

आरोह सा रे॒, रे॒ म॑ प, नि सां।

अवरोह सां नि ध॒ प म॒'ग रे॒ ड रे॒ सा।

पकड सा ग रे॒ रे॒ प, म॒ प ध॒ प॑ रे॒ ग रे॒ रे॒ सा।

''पंचमस्तु तथा गेयो रागिण्या सह शारदे।'' [25]

अर्थात पंचम राग तथा उसका परिकर शरद ऋतु में गाया जाता है।

2.2.6 पंचम राग का परिचय

यह मारवा थाट से उत्पन्न राग माना जाता है। मुख्य रूप से यह कह सकते है कि शुद्ध धैवत वाले ललित में पंचम स्वर के प्रयोग से यह राग उत्पन्न होता है। इस राग में ऋषभ कोमल, दोनों मध्यम तथा अन्य स्वर शुद्ध होते है। इसकी जाति सम्पूर्ण है। इसका वादी मध्यम तथा सम्वादी षडज है। यह ललित अंग से गाया जाता है।

संगीत दर्पण में 'नटनारायण' राग तथा उसकी रागिनियों को हेमन्त ऋतु में गाने का निर्देशन किया है। यथा -

''नटनारायणो परागः रागिनिया सह हेमके।'' [26]

नटनारायण राग कइ प्रकार से प्रचलन में है विशेषकर सिक्ख परम्परा में अप्रचलित रागों की श्रेणी में इस राग को रखा जा सकता है। अप्रचलित होने के कारण इस राग के कइ स्वरूप मिलते है। इक प्रकार खमाज थाट का है जिसमें नि कोमल अन्य स्वर शुद्ध लगते है। जिसमें 'म सा' वादी संवादी माना गया है। गायन समय मध्यरात्रि है। सिक्ख परम्परा में इस राग को वक्र स्वरूप में गाया-बजाया जाता है जिसका आरोह-अवरोह इस प्रकार है। -

आरोह सा म ग म रे मप ध नि सां [27]

अवरोह सां ध प म ध प ग म सा [28]

राग और ऋतु का सम्बन्ध मानवीय भावना से है। जिस तरह मानव भावनाएं सुबह जगने से लेकर रात में सोने तक बदलती रहती है दुसरे शब्दों में मानव की प्रकृति दिन के हर पल हर क्षण में नित नुतन स्वरूप धारण करती है जैसे सुबह जगने के बाद भी मन अलसाया रहता है, नित्य क्रिया से निवृत्त होने के बाद कुछ फुर्ति शरीर में आती है फिर नाश्ता भोजन के बाद शरीर और मन में आनंददायक भाव उत्पन्न होता है उसी प्रकार हमारे रागात्मक विचार सम्बन्ध में जो बदलाव आता है वही बदलाव राग की स्वरावली में भी देखने में आता है।

यह संकल्पना जो रागों की स्वरावली मे निहित है उससे ऋतु जन्य भावना आनी कलाकार के अनुभव और चिंतन मनन पर निर्भर करती है। यह देखने में आता है कि गायक या वादक अपनी कला की साधना से किसी भी ऋतु में वसंत या मेघ की प्रस्तुति करके उस ऋतु का वातावरण पैदा कर सकता है। यह ऋतु के वातावरण की सृष्टि करना रागों की स्वरावली द्वारा गायक की कला दक्षता पर निर्भर करती है।

संगीतज्ञों का मत है कि राग-रागिनी पद्धति में वर्णित छः राग छः ऋतुओं का ही द्योतक है। हर मत के अनुसार छः रागों के नाम में अंतर दिखाइ पडता है यह अंतर उस मत के विचारकों के अनुभवों का प्रतिफलन है। वर्तमान में वर्षा और वसंत ऋतु के गाये बजाये जाने वाले रागों का ही मुख्य रूप से प्रचार-प्रसार है। अन्य ऋतुओं के राग वर्तमान में नहीं प्रचारित है। कुछ रागों के नाम से ही स्पष्ट होता है कि यह राग वर्षा ऋतु का या वसंत ऋतु का है।

वर्तमान में 'मधुमास सारंग' बहुत ही प्रचलित राग है। इस नाम से ही स्पष्ट होता है कि मधुमास दोरस मौसम को कहते है। यह दोरस मौसम वसंतु ऋतु का द्योतक है लेकिन इस राग को ऋतु राग के रूप में मान्यता नहीं है। इसी तरह 'हिंडोल राग' को बहुत से विचारक वसंत ऋतु का राग मानते है लेकिन प्रचार में यह ऋतु राग के रूप में प्रचलित नहीं है। इस राग में बहार को मिलाने से 'हिंडोल बहार' राग की उत्पत्ति होती है जो वर्तमान में बहुत से गायक-वादक गाते-बजाते है। 'हिंडोल बहार' वसंत ऋतु का राग है जो किसी भी समय इस ऋतु में गाया या बजाया जा सकता है। इस अध्याय में मुख्य रूप से प्रचलित रागों को ही स्थान दिया गया है। क्योंकि अप्रचलित रागों में मते मते भिन्नता पाई जाती है जो एक अलग शोध का विषय है। कुशल संगीतज्ञ छायालग और संकीर्ण रूप से किसी भी राग में मल्हार अंग या बहार अंग को मिश्रित कर वर्षा ऋतु या वसंत ऋतु में गाते बजाते देखे जा सकते है।

संदर्भ सूची

1. गुणे पंडित नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रभाकर दर्शिका, पाठक पब्लिकेशन्स, इलाहाबाद, तृतीय संस्करण, पृष्ठ. 111-112
2. वही पृष्ठ 41
3. गुणे पंडित नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रवीण दर्शिका भाग 2, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.56-57
4. वही पृ.62
5. गुणे स्व.पंडित नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रवीण दर्शिका भाग-3, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.85-86
6. बेनर्जी डो,गीता, मल्हार दर्शन, संगीतश्री प्रकाशन, कानपुर, पृ.170-171
7. वही पृ.188
8. वही पृ.192
9. वही पृ.196
10. पाठक पंडित जगदीश नारायण, संगीत शास्त्र प्रवीण, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.282
11. बैनर्जी डो,गीता, मल्हार दर्शन, संगीतश्री प्रकाशन, कानपुर, पृ.279
12. पंडित भातखंडे, क्रमिक पुस्तक मालिका, पृ.322
13. तानसेनी तथा गौडो दयारुणी झांझ नामिका। भा,सं,शा, भाग 1, पृ.254
14. बैनर्जी डो,गीता नारायण लक्ष्मण, संगीत प्रवीण दर्शिका भाग 3, पाठक पब्लिकेशन्स, पृ.215
15. वही पृ.220
16. श्रीवास्तव प्रो.हरिशचन्द्र मधुरस्वरलिपि संग्रह भाग 2, संगीत सदन प्रकाशन, इलाहाबाद, नवम संस्करण 2011, पृ.156
17. वही भाग 3, पृ.50-51
18. वसंत, संगीत विशारद, संगीत कार्यालय, हाथरस, पृ.301
19. गुणे स्व.पंडित नारायण, संगीत प्रवीण दर्शिका, भाग 4, पृ.56
20. संगीत, अप्रचलित राग ताल, अंक - जनवरी-फरवरी 1983, पृ.90
21. वही पृ.108
22. पंडित दामोदर, संगीत दर्पण, अनुवादक - भट्ट डो,विश्वम्भरनाथ, संगीत कार्यालय, हाथरस, संस्करण-जुन 2015, पृ.77
23. वही पृ.87

24. श्रीवास्तव प्रो.हरिशचन्द्र, मधुर स्वरलिपि संग्रह, भाग 3, पृ.241
25. संगीत दर्पण, पृ.87
26. वही पृ.70
27. Khiwiki-org.in
28. वही